



वैदिक कालीन जीवन

ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू. से 1000 ई.पू.)

Rigvedic period (1500 BC to 1000 BC)

राजनीतिक व्यवस्था Political system:-

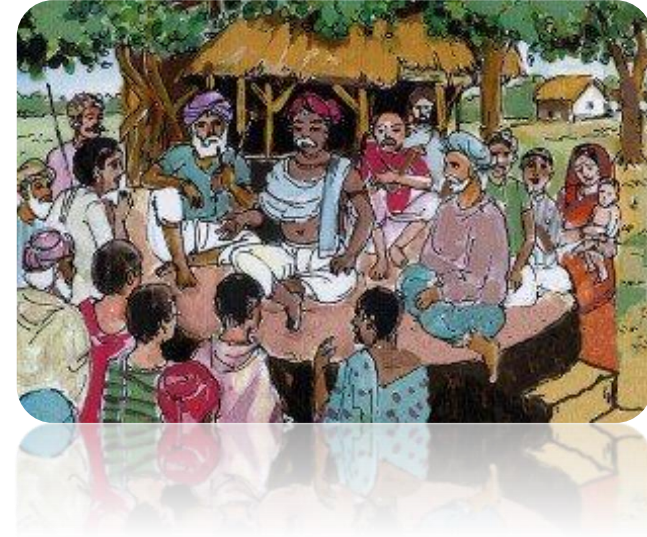
- ❑ राष्ट्र :-ये सामान्यतः छोटे-छोटे राज्य होते थे इसका शासक राजन (राजा) कहलाता था 'सम्राट' के अधीन अनेक छोटे राज्य | Nations: – These were generally small states, their ruler was called Rajan (King). Many small states under the 'Emperor'.



- ❑ **जन :-** राजा राष्ट्र का प्रमुख होता था। राजा को जनरक्षक भी कहा जाता था। Jan :- The king was the head of the nation. The king was also called the public protector.
- ❑ **विश :-** विश 'जन' से छोटी इकाई थी। इसके प्रमुख को 'विशपति' कहा जाता था। Vish :- Vish was a smaller unit than 'Jan'. Its head was called 'Vishpati'.



- ❑ **ग्राम :-** 'विश' से छोटी इकाई थी ग्राम । कई कुलों का समूह ग्राम होता था। इसके मुखिया को 'ग्रामणी' कहाँ था। Gram :- Gram was a smaller unit than 'Vish'. The group of many clans was a village. Where was its head 'Gramani'?
- ❑ **कुल :-** यह सबसे छोटी इकाई हुआ करती थी । Total: – This used to be the smallest unit.

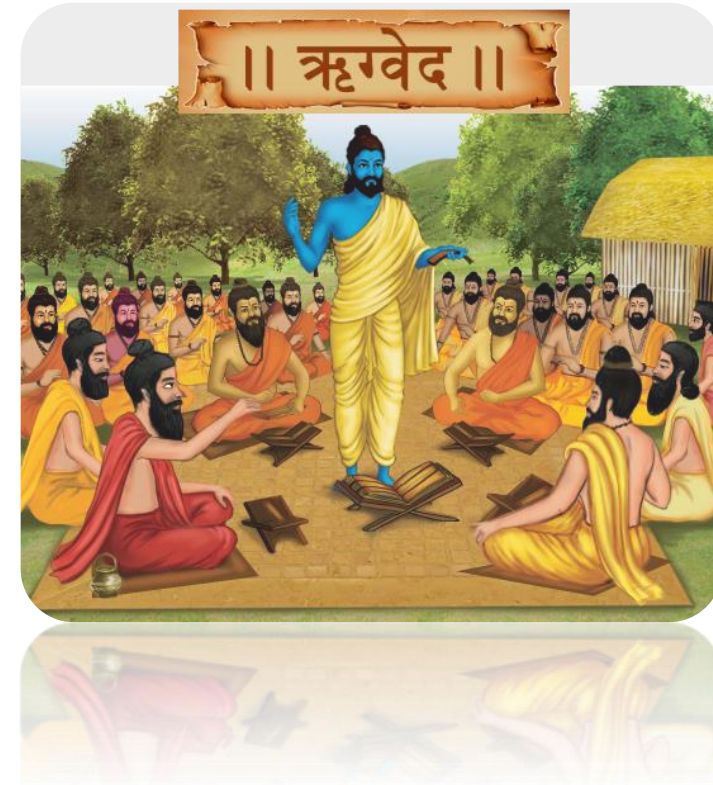


1. **राजतन्त्र का प्रचलन | The practice of monarchy.**
2. **'राजा' 'जन' का रक्षक था | The 'King' was the protector of the 'people'.**
3. **उसकी स्थिति कबायली मुखिया जैसी थी | His position was like that of a tribal chief.**
4. **राजा 'बलि' नामक कर पर निर्भर :- राजा को उसकी सेवाओं के बदले, अपनी प्रजा तथा विजित जनों से 'बलि' (राजस्व अथवा भेंट) दी जाती | The king depended on a tax called 'Bali': In return for his services, the king was given 'Bali' (revenue or gift) from his subjects and conquered people.**



सभा और समिति का उल्लेख Mention of meeting and committee:-

- ❑ राजा की निरंकुशता पर अंकुश के लिए ऋग्वेद में हमें दो निकायों का उल्लेख मिलता है We find mention of two bodies in Rigveda to check the autocracy of the king.
- ❑ शासकीय पदाधिकारी राजा के प्रति उत्तरदायी थे। Government officials were answerable to the king.



- ❑ ऋग्वैदिक काल में महिलाएं भी राजनीति में भाग लेती थीं। सभा एवं विदथ परिषदों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी थी। Women also participated in politics during the Rig Vedic period. There was active participation of women in the Sabha and Vidatha Parishads.
- ❑ वैदिक कालीन न्यायधीशों को प्रश्नविनाक कहा जाता था। The judges of the Vedic period were called Prashvinaka.
- ❑ भूमि का स्वामित्व जनता में निहित था । Ownership of land was vested in the public.

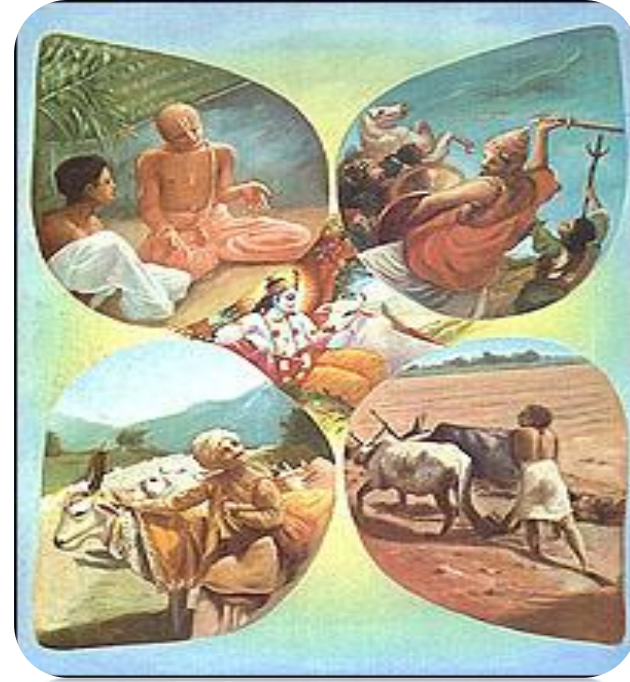


सामाजिक व्यवस्था Social system

- ❑ संयुक्त परिवार प्रथा का प्रचलन Prevalence of joint family system
- ❑ पितृ सत्तात्मक समाज होते हुए महिलाओं को यथोचित सम्मान प्राप्त | Despite being a patriarchal society, women get due respect.
- ❑ महिलाओ को भी शिक्षित होने का अधिकार | Women also have the right to be educated.



- प्रारंभ में ऋग्वैदिक समाज दो वर्गों आर्यों एवं अनार्यों में विभाजित । किन्तु कालांतर में जैसा की हम ऋग्वेद के दशक मंडल के पुरुष सूक्त में पाए जाते हैं की समाज चार वर्गों- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र: में विभाजित हो गया ।
- Initially the Rigvedic society was divided into two classes, Aryans and Non-Aryans. But with time, as we find in the Purusha Sukta of Dashak Mandal of Rigveda, the society got divided into four classes – Brahmin, Kshatriya, Vaishya and Shudra.

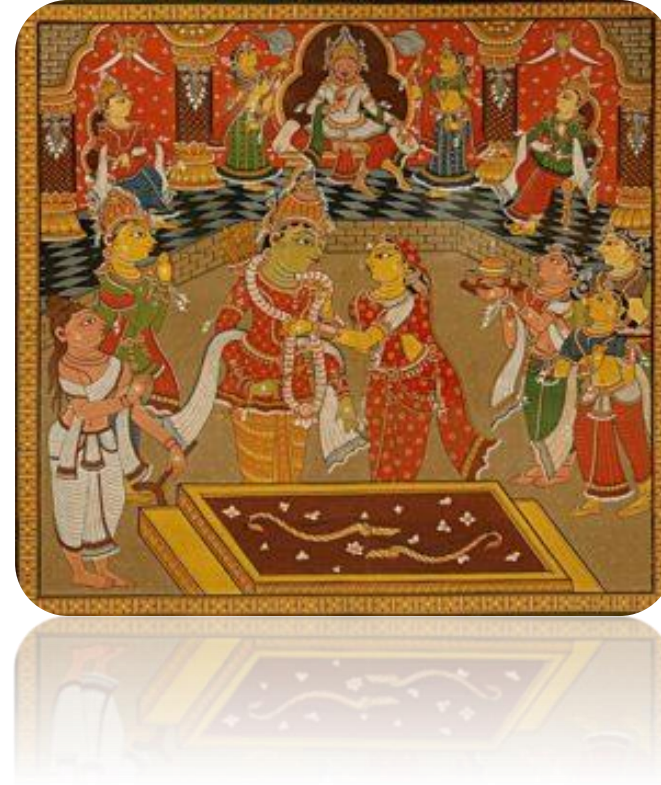


विवाह पद्धति:- Marriage system

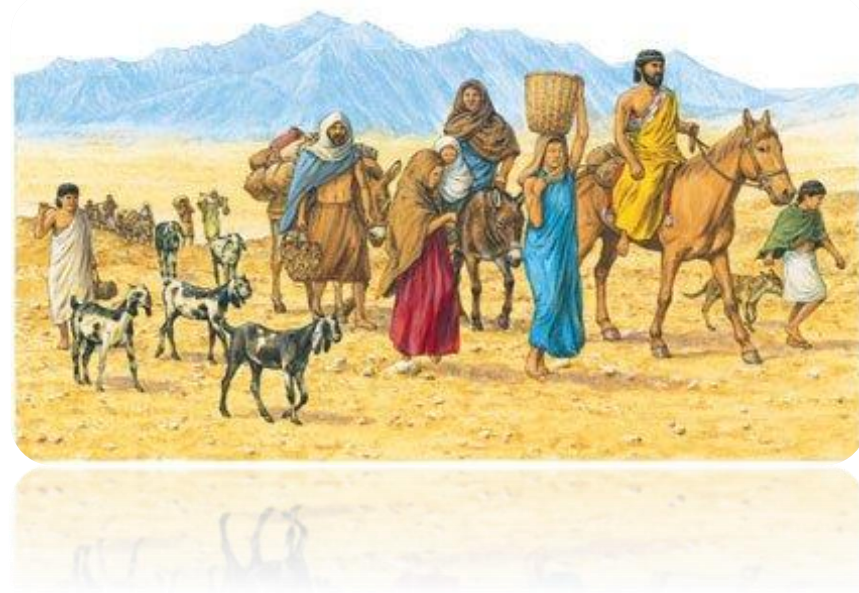
- ❑ विवाह व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन का प्रमुख अंग था। Marriage was an important part of personal and social life.
- ❑ अंतरजातीय विवाह होता था inter-caste marriage took place
- ❑ बाल विवाह का निषेध था। Child marriage was prohibited.



- ❑ विधवा विवाह की प्रथा प्रचलन में थी। The practice of widow remarriage was in vogue.
- ❑ जीवन भर अविवाहित रहने वाली लड़कियों को 'अमाजू कहा जाता था। Girls who remained unmarried throughout their life were called 'Amaju'.
- ❑ सती प्रथा और पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। Sati system and purdah system were not prevalent.



- ❑ ऋग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक था। Rig Vedic society was patriarchal.
- ❑ पिता सम्पूर्ण परिवार, भूमि संपत्ति का अधिकारी होता था The father was in charge of the entire family and land property.
- ❑ ऋग्वैदिक काल में दास प्रथा का प्रचलन था, परन्तु यह प्राचीन यूनान और रोम की भांति नहीं थी Slavery was prevalent in the Rig Vedic period, but it was not like ancient Greece and Rome.



ऋग्वैदिक धर्म Rigvedic religion

- ❑ आर्यों का धर्म बहुदेववादी । The religion of the Aryans is polytheistic.
- ❑ वे प्राकृतिक भक्तियों-वायु, जल, वर्षा, बादल, अग्नि और सूर्य आदि की उपासना करते । They worshiped natural elements like air, water, rain, clouds, fire and sun etc.
- ❑ ऋग्वैदिक काल का सबसे महत्वपूर्ण देवता इंद्र है। The most important god of the Rig Vedic period is Indra.
- ❑ इंद्र को युद्ध और वर्षा दोनों का देवता माना गया है। Indra is considered the god of both war and rain.



❑ ऋग्वेद में इंद्र का 250 सूक्तों में वर्णन मिलता है।

In the Rigveda, Indra is described in 250 hymns.

❑ इंद्र के बाद दूसरा स्थान अग्नि का था। अग्नि का कार्य मनुष्य एवं देवता के बीच मध्यस्थ की भूमिका में था। Agni was second after Indra.

The function of Agni was to act as a mediator between man and God.

❑ ऋग्वेद में अग्नि के लिए 200 सूक्तों का उल्लेख मिलता है। There are 200 hymns mentioned about Agni in the Rigveda.

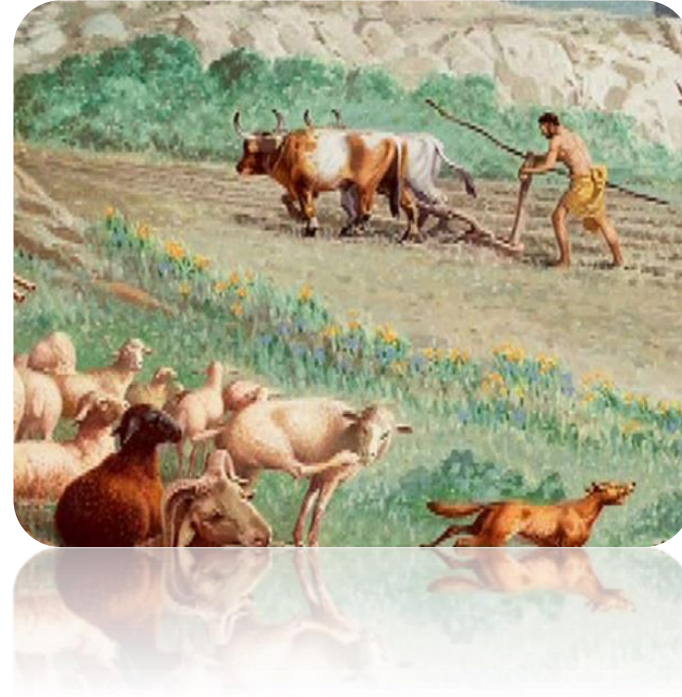
❑ ऋग्वैदिक काल में मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं।

There is no mention of idol worship in the Rig Vedic period.

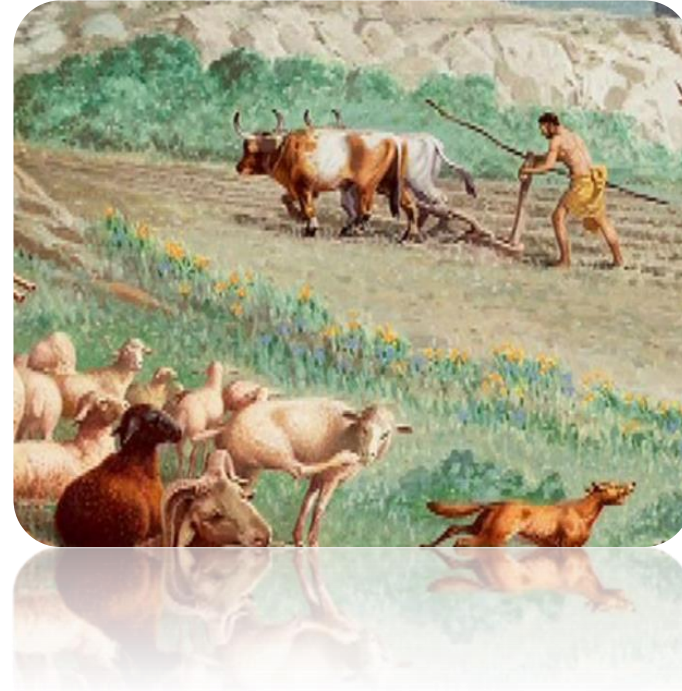


ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था Rigvedic Economy

- ❑ कृषि एवं पशुपालन Agriculture and Animal Husbandry
- ❑ गेहू की खेती प्रचलित। Wheat cultivation is prevalent.
- ❑ मुख्य संपत्ति गोधन या गाय थी। The main asset was cattle or cows.



- ❑ हल के लिए लांगल अथवा 'सीर' शब्द का प्रयोग
Use of the word Lungal or 'Sir' for plough.
- ❑ उपजाऊ भूमि को 'उर्वरा' कहा जाता Fertile land is called 'fertile'
- ❑ ऋग्वेद के चौथे मंडल में सम्पूर्ण मन्त्र कृषि कार्यों से संबंधित है। The entire mantra in the fourth division of Rigveda is related to agricultural activities.

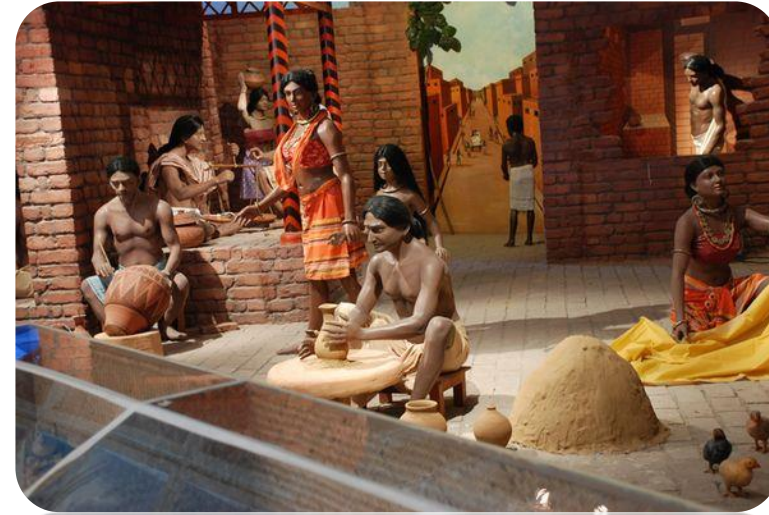


- ❑ भूमि निजी संपत्ति न होकर उस पर सामूहिक अधिकार | Land is not private property but has collective rights over it.
- ❑ अर्थव्यवस्था का आधार कृषि और पशुपालन
Agriculture and animal husbandry are the basis of the economy.
- ❑ आर्यों का अति उपयोगी पशु घोडा | Horse is a very useful animal of the Aryans.



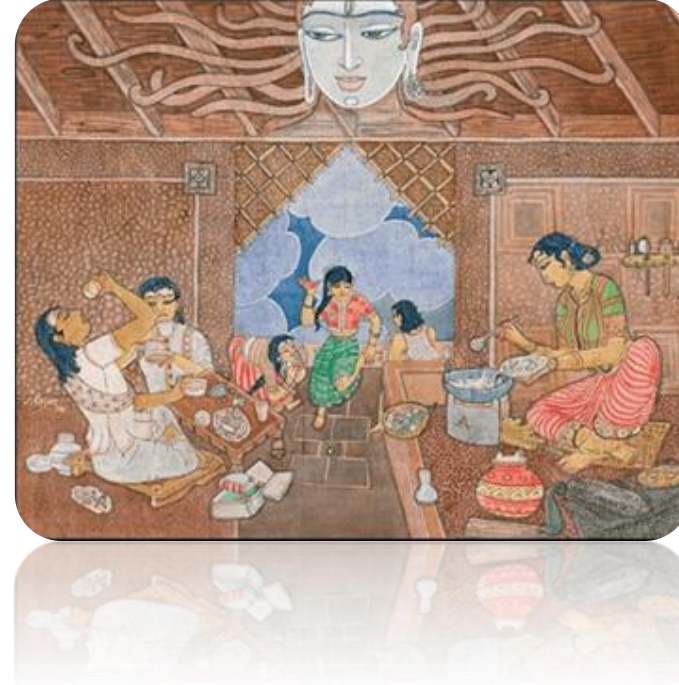
वाणिज्य व्यापार Commerce business

- ❑ व्यापार स्थल और जल दोनों मार्ग से trade both land and water
- ❑ वाणिज्य व्यापार पर पणियों का एकाधिकार । Monopoly of traders on commercial trade.
- ❑ सूदखोर को 'वेकनाट कहा जाता था। The usurer was called 'Vekanat'.
- ❑ क्रय विक्रय के लिए विनिमय प्रणाली का अविर्भाव हो चुका था। The exchange system for buying and selling had come into existence.

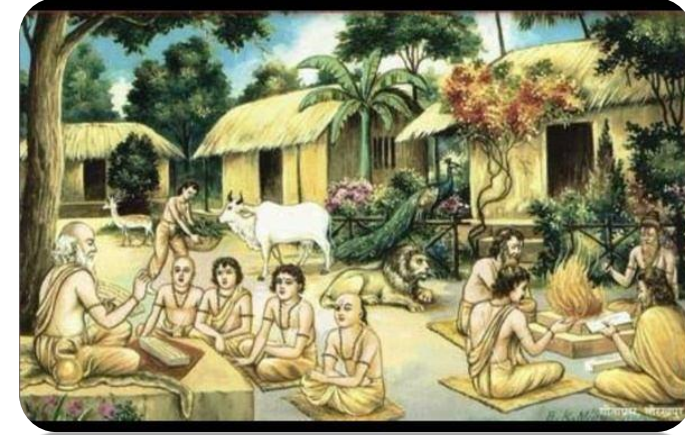


व्यवसाय एवं उद्योग धंधे Business and Industry

- ❑ ऋग्वेद में बढ़ई, बुनकर, चर्मकार, . कुम्हार के उल्लेख से इस काल के व्यवसाय की जानकारी ।
In Rigveda, carpenter, weaver, cobbler,.
Information about the occupation of this period from the mention of potter.



- ❑ ऋग्वेद में वैद्य के लिए भीषक' शब्द का प्रयोग मिलता है। In Rigveda, the word 'Bhishak' is used for the physician.
- ❑ 'तसण' शब्द बढ़ई के लिए। 'Tasan' is the word for carpenter.



स्मरणीय तथ्य Memorable facts

- ❑ 'पणि' व्यापार के साथ-साथ मवेशियों की भी चोरी करते थे। उन्हें आर्यों का शत्रु माना जाता था। Along with trading, 'Pani' also used to steal cattle. They were considered enemies of the Aryans.
- ❑ वैदिक लोगों ने सर्वप्रथम तांबे की धातु का इस्तेमाल किया। The Vedic people primarily used copper metal.
- ❑ आर्य भारत में आये, तब तीन श्रेणियों में विभाजित थे- योद्धा, पुरोहित और सामान्य।
When the Aryans came to India, they were divided into three categories – warriors, priests and commoners.

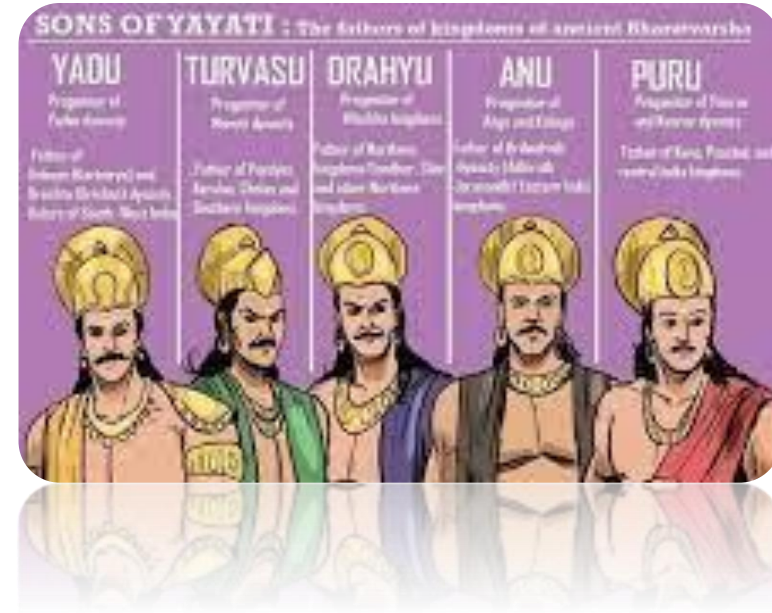


- ❑ ऋग्वेद में सोम देवता के बारे में सर्वाधिक उल्लेख मिलता है। Most of the mentions about God Som are found in Rigveda.
- ❑ नियोग प्रथा :- संतान की इच्छुक महिलाएं नियोग प्रथा का वरण करती थीं, जिसके अंतर्गत उन्हें अपने देवर के साथ साहचर्य स्थापित करना पड़ता था। Niyoga system:- Women interested in having children used to opt for Niyoga system, under which they had to establish companionship with their brother-in-law.
- ❑ आर्यों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन था। वे गाय, बैल, भैंस घोड़े और बकरी आदि पालते थे। The main occupation of the Aryans was animal husbandry. They reared cows, bulls, buffaloes, horses and goats etc.



उत्तरवैदिक काल(1000 - 600 ई.पु.) Post-Vedic Period (1000 - 600 BC)

- ❑ राज्य संस्था — कबीलाई तत्व अब कमजोर तथा अनेक छोटे-छोटे कबीले एक-दूसरे में विलीन होकर बड़े क्षेत्रगत जनपदों का जन्म।
State Institution – Tribal elements are now weak and many small tribes merged with each other and gave birth to large territorial districts.
- ❑ उदाहरणार्थ, पुरु एवं भरत मिलकर कुरु और तुर्वस एवं क्रिवि मिलकर पांचाल कहलाए। For example, Puru and Bharat together were called Kuru and Turvas and Krivi together were called Panchal.



- ❑ विभिन्न प्रदेशों में आर्यों के स्थायी राज्य स्थापित हो गये। राष्ट्र शब्द जो प्रदेश का सूचक है, पहली बार इसी काल में प्रकट होता है।
Permanent kingdoms of Aryans were established in various regions. The word 'Rashtra', which indicates a region, appears for the first time in this period.
- ❑ राज्य के पद में वृद्धि के साथ ही राजा के शक्ति और अधिकारों में वृद्धि । With the increase in the status of the state, the power and authority of the king also increased.
- ❑ राजा अपनी सारी प्रजा का स्वतंत्र स्वामी होने का दावा करता था। The king claimed to be the independent master of all his subjects.



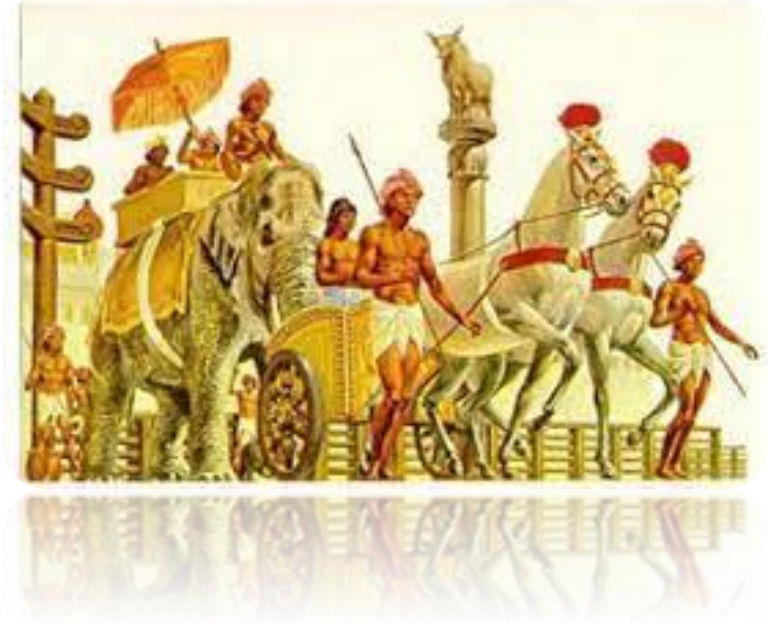
प्रशासनिक संस्थाएँ Administrative institutions

- ❑ जन, परिषदों, सभा, समिति विदथ का महत्व कम उत्तरवैदिक काल में । The importance of people, councils, meetings and committees was less in the later Vedic period.
- ❑ राजा की शक्ति बढ़ने के साथ इन संस्थाओं के अधिकारों में गिरावट । (क्योंकि राजा स्वतंत्र)
The rights of these institutions declined with the increase in the power of the king. (because the king is free)
- ❑ स्त्रियाँ अब सभा समिति में भाग नहीं ले पाती थीं।
Women were no longer able to participate in the assembly committees.
- ❑ पदाधिकारी Official



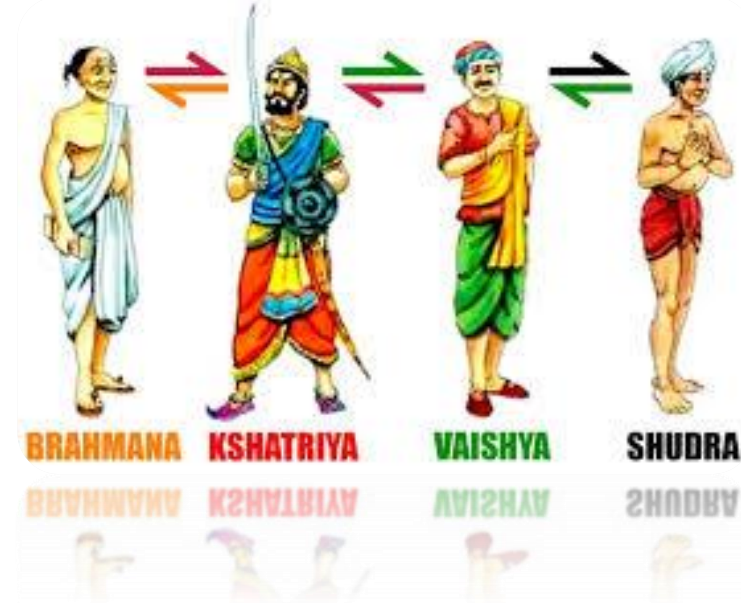
नियमित कर प्रारंभ start regular tax

- ❑ उत्तरवैदिक काल के अन्त तक में बलि और शुल्क के रूप में नियमित रूप से कर देना लगभग अनिवार्य बनता जा रहा। By the end of the Later Vedic period, regular taxes in the form of sacrifices and fees were becoming almost mandatory.
- ❑ राजा न्याय का सर्वोच्च अधिकारी बन गया। The king became the supreme authority of justice.
- ❑ निम्न स्तर पर प्रशासन एवं न्यायकार्य ग्राम पंचायतों के जिम्मे था, जो स्थानीय झगड़ों का फैसला करती थी। At the lower level, administration and justice were the responsibility of Gram Panchayats, which decided local disputes.



सामाजिक स्थिति Social status

- उत्तरवैदिक काल में सामाजिक व्यवस्था का आधार वर्णाश्रम व्यवस्था , वर्ण व्यवस्था में अधिक कठोरता आने लगी थी। In the later Vedic period, Varnashrama system, the basis of social system, started becoming more rigid in the Varna system.
- समाज में चार वर्ण-ब्राह्मण, राजन्य, वैश्य और शूद्र थे। There were four varnas in the society – Brahmin, Rajanya, Vaishya and Shudra.

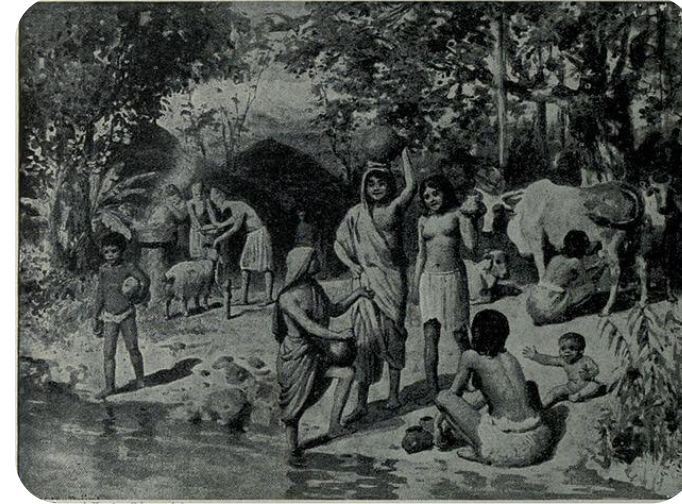


- ❑ ब्राह्मण के लिए ऐहि This is for Brahmin
- ❑ क्षत्रिय के लिए आगच्छ fire for kshatriya
- ❑ वैश्य के लिए आद्रव adrava for vaishya
- ❑ शूद्र के लिए आधव शब्द का प्रयोग। Use of the word Aadhav for Shudra.
- ❑ ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य इन तीनों को द्विज कहा जाता था। Brahmin, Kshatriya and Vaishya, all three were called Dwija.

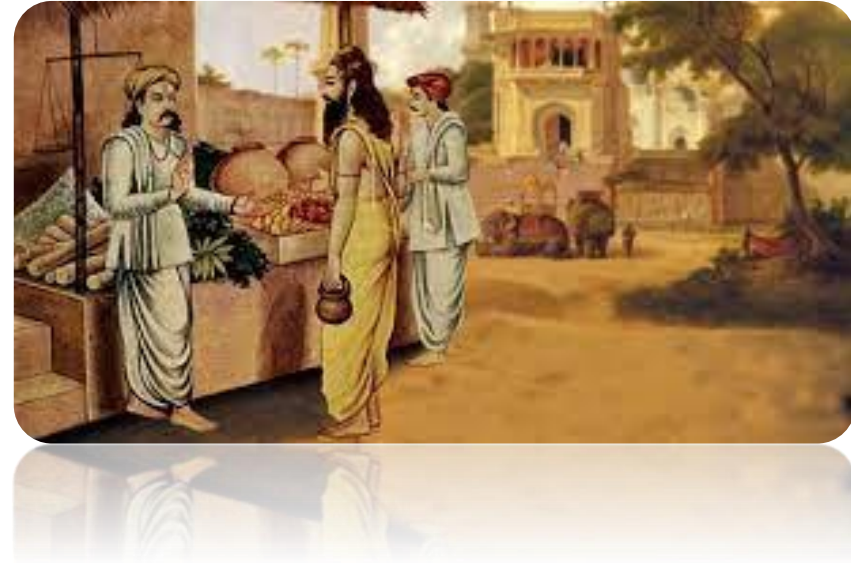


आर्थिक स्थिति Economic condition

- ❑ उत्तरवैदिक काल में कृषि आय का मुख्य पेशा।
Agriculture was the main occupation for income in the later Vedic period.
- ❑ लोहे के उपकरणों के प्रयोग में लगातार वृद्धि जिससे कृषि क्षेत्र में और उपज में वृद्धि।
Continuous increase in the use of iron implements, leading to increased production in agriculture sector.
- ❑ हल द्वारा बनी रेखा को सीता कहा जाता था।
The line made by the plow was called Sita.



- ❑ तैत्तरीय संहिता में ऋण के लिए कुसीद शब्द ।
Kusid is the word for loan in Taittiriya Samhita.
- ❑ शतपथ ब्राह्मण में महाजनी प्रथा का पहली बार जिक्र । Mention of Mahajani system for the first time in Shatapatha Brahmana.
- ❑ सूदखोर को कुसीदिन कहा गया है। The usurer has been called a usurer.
- ❑ माप की विभिन्न इकाइयाँ :- निष्क, शतमान, पाद, कृष्णल आदि Various units of measurement: – Nishka, Shatman, Paad, Krishnal etc.



धार्मिक स्थिति Religious status

- ❑ प्रजापति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त। Prajapati got the highest position.
- ❑ वरुण मात्र जल के देवता माने जाने लगे। Varun came to be considered only the god of water.
- ❑ पूषण शूद्रों के देवता। Pushan is the god of Shudras.
- ❑ इस काल में प्रत्येक वेद के अपने पुरोहित हो गए। During this period, each Veda had its own priests.
- ❑ निष्काम कर्म के सिद्धान्त का प्रतिपादन सर्वप्रथम ईशोपनिषद् में किया गया है। The principle of selfless action was first propounded in Ishopanishad.

